

॥श्री हरि॥

गीता उच्चारण की सरल एवं उचित विधि

श्रीमद्भगवद्गीता एक अलौकिक एवं प्रासादिक ग्रंथ है। जो कि स्वयं भगवान नारायण देव के श्रीमुख से प्रगट हुई है। इसीलिए इसको देववाणी भी कहा जाता है। अतः हम लोगों को इसका बहुत ही श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक पठन-पाठन करना चाहिए।

चूँकि श्री व्यास जी महाराज ने इसको संस्कृत भाषा में आबद्ध किया है। अतः अभी के युग में सर्व साधारण प्राणी इसको पढ़ने में कठिनता महसूस करते हैं। बहुत से लोग इसके श्लोकों का सही ढंग से उच्चारण नहीं कर पाते हैं।

इस सर्वव्यापक दुर्बलता को देखते हुए भगवद्कृपा से विचार उत्पन्न हुआ है कि सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी श्रीमद्भगवद्गीता का सही ढंग से पाठ करके अपना कल्याण कर ले।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस "app" के माध्यम से सरल नीति से गीता का उच्चारण करने का तरीका बतलाया गया है। साधकों की सुविधा के लिए इसमें "lyrics" का भी समावेश किया जा रहा है।

श्रीमद्भगवद्गीता में कुल 700 श्लोक है। उनमें 645 श्लोक अनुष्टुप छंद के और 55 श्लोक त्रिष्टुप छंद के हैं। प्रत्येक श्लोक में चार चरण होते हैं। अनुष्टुप छंद के प्रत्येक चरण में 8 अक्षर होते हैं। और पूरा श्लोक 32 अक्षरों का होता है। तथा त्रिष्टुप छंद के प्रत्येक चरण में 11 अक्षर होते हैं। और पूरा श्लोक 44 अक्षरों का होता है। अनुष्टुप छंद श्लोकों को पढ़ते समय उसे 8-8 अक्षर का 4 भाग बना ले। अर्थात् 8 अक्षर गिन कर एक साथ पढ़ने से एक चरण पूरा होगा। इसी तरह त्रिष्टुप छंद वाले श्लोकों के 4-4 अक्षरों वाले श्लोकों के एक चरण में 11 अक्षर पढ़कर गिनना चाहिए। गीता के कुछ श्लोकों में अक्षर गणना करते समय कहीं-कहीं एक चरण में नौ तथा 12 अक्षर भी

करना चाहिए। श्लोक में अक्षरों की गणना में आधा अक्षर अर्थात् हलन्त गिनती करते समय पूर्ण अक्षर को ही गिनना चाहिए।

गीता जी का सही उच्चारण सीखने वाले सामान्य पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक चरण को अलग-अलग विभिन्न रंगों में किया गया है। इससे श्लोक के प्रत्येक चरण को समझने में सहायता मिलेगी।

वराह पुराण में आया है कि "नित्य गीताजी का पाठ करने वाले मनुष्य का पतन नहीं होता है।" इसलिए हम सबको गीताजी का नित्य पाठ यथासंभव करना ही है। आशा है जो पाठक सरल विधि से गीता का उच्चारण व पठन-पाठन चाहते हैं। उनके लिए यह विधि उपयोगी सिद्ध होगी।